ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी

श्री गोरक्ष नाथ

सिद्ध चालीसा

रचियता-योगी विलास नाथ

ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी

❋ ॐ शिव गोरक्ष योगी ❋

श्री गोरक्षनाथ सिद्ध चालीसा

(सरल हिन्दी अनुवाद, स्तुति एवं आरती सहित)

रचियता– **महन्त डॉ. योगी विलासनाथ**

सम्मानित उपाधि डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी (जर्मन–यूरोपियन यूनियन)

गुरु योगी आनन्दनाथ जी (पूर्व महामंत्री योगी महासभा)

–प्रकाशक–

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर अखाड़ा, अपर रोड, हरिद्वार–249401

फोन (01334) 226583

Website : http://.yogigorakshnath.org

E-mail : guruyogivilasnathji@gmail.com, yogivilasnath12@gmail.com

षष्ठम् संस्करण 5000] **(मूल्य 10.00 रु0)** [सन् 2013

❋ ॐ शिव गोरक्ष योगी ❋

"ध्यानम्"

ॐ शिवस्वरुपं गोरक्षनाथम् निरंजनो
ऋद्धि सिद्धि वर दायकम्।
महामत्स्येन्द्र नन्दनम् नाती पुत्र आदि नाथम्।।
जटिला भिधः सेल्सिंगी मस्तक चन्द्र सुशोभितम्।
झोली झण्डी मिनमेखला कटीवस्त्र मृगछाला धारणम्।।
योगी युक्तः समाधिना वटवृक्ष छाया पद्मासनम्।
मादेश सतु मम तत्र योगेश्वरो,
सर्वदाः मम हृदय निवासनम्।।

अर्थ-हे गुरु गोरक्षनाथ जी आप निरंजन एवं शिव स्वरूप हैं तथा आप ऋद्धि सिद्धियों का वरदान देने वाले हैं। हे गुरु गोरक्षनाथ जी आप माया स्वरुपी दादा महामत्स्येन्द्र नाथ जी के सुपुत्र (शिष्य) हैं एवं आदि नाथ जी के नाती हैं। आप जटाजूट धारी एवं सेली सिंगी धारण किये हुए हैं आपके मस्तक पर विराजित चन्द्र अतिषय शोभायमान है। आप झोली व भगवा ध्वज लिये हुए कमर में मिन मेखला व मृगछाला पहने हुए हैं। अतः वट वृक्ष की शीतल छाया में पद्मासन लगा के योग युक्त समाधि लगी हुई है। वह योगेश्वर सदा सर्वदा मेरे हृदय में निवास करे उस योगेश्वर को मेरा ॐ आदेश आदेश आदेश।

❋ श्री गुरु गोरक्षनाथ सिद्ध चालीसा ❋

दोहा- गणपति गिरजा पुत्र को।
सुमरूँ बारम्बार।।
हाथ जोड़ विनती करूं।
शारद नाम आधार।।

अर्थ-माता गिरजा गौरी के पुत्र श्री गणपति (गणेशनाथ जी) देवता का बार–बार सुमिरण करते हुये वीणा वादिनी, शुभ्र वस्त्रधारी, श्वेत पद्मासनी माँ शारदा को हृदयस्थ हाथ जोड़कर नमस्कार करते हुये। इन्हीं के कृपा आधार पर श्री शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी क चालीसा का श्री गणेशा (प्रारम्भ) करता हूँ।

जय जय जय गोरक्ष अविनाशी।
कृपा करो गुरु देव प्रकाशी।।
जय जय जय गोरक्ष गुरु ज्ञानी।
इच्छा रूप योगी वरदानी।।

अर्थ-हे गुरु गोरक्षनाथ जी आप अजर, अमर, अविनाशी हो आपकी जय हो। आपकी जय हो।। आपकी जय हो।।। हे ज्ञान का प्रकाश देने वाले गुरु गोरक्षनाथ जी हम पर कृपा करो। हे गुरु गोरक्षनाथ जी आप सर्वज्ञानी हो, आप गुणों की खान हो, आप इच्छानुरूप अनन्त रूप धारण करते हुए योगियों को सेवक भक्तों को मनवांच्छित वरदान देते हो आपकी जय हो। आपकी जय हो।। आपकी जय हो।।।

अलख निरंजन तुम्हरो नामा।
सदा रहो भक्तन हित कामा।।
नाम तुम्हारा जो कोई गावे।
जन्म जन्म के दुःख नशावे।।

अर्थ-हे शिव स्वरूप गुरु गोरक्षनाथ जी जब–जब आपको अलख निरंजन नाम से पुकारा जाता है तब–तब आप सदा–सदा के लिए योगियों, भक्तों तथा सेवकों के हितार्थ कार्य सिद्ध कर सद्मार्ग का मार्गदर्शन करते हैं। जो प्राणी आपका **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** नाम का बारंबार सुमरण करता है तत्काल उसके जन्म जन्मान्तर के दुःख एवं पापों का नाश हो जाता है।

जो कोई गोरक्ष नाम सुनावे।
भूत पिशाच निकट नहीं आवे।।
ज्ञान तुम्हारा योग से पावे।
रूप तुम्हारा लख्या न जावे।।

अर्थ-हे गुरु गोरक्षनाथ जी जो प्राणी **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इस मंत्र का जाप करता है, स्मरण करता है। भूत पिशाच तथा कुबुद्धि निकट न आकर दूर भागती है। आपके कोटि सूर्य समान तेजस्वी रूप का दर्शन तथा आपका महाज्ञान, योगी योग द्वारा, ज्ञानी ज्ञान द्वारा तथा भक्त भक्ति द्वारा और सेवक सेवा सुश्रुषा द्वारा प्राप्त करते हैं।

निराकार तुम हो निर्वाणी।
महिमा तुम्हारी वेद न जानी।।
घट घट के तुम अन्तर्यामी।
सिद्ध चौरासी करें प्रणामी।।

अर्थ-हे गुरु गोरक्षनाथ जी! आप महाज्ञानी अर्थात निराकार हो। आप महात्यागी अर्थात् निर्वाणी हो। अतः आपकी इस महिमा का बखान वेद पुराण करने में असमर्थ हैं। आप समस्त घट–घट में अर्थात् कण–कण में व्याप्त हैं। इसलिए आप अन्तर्यामी हैं। इस कारण चौरासी सिद्ध, साधक, योगी, भक्त आपको प्रणाम करते हैं। अर्थात् समस्त चौरासी योनियों के जीव आपको नत्मस्तक होते हैं।

भस्म अंग गल नाद विराजे।
जटा शीश अति सुन्दर साजे।।
तुम बिन देव और नहीं दूजा।
देव मुनि जन करते पूजा।।

अर्थ-हे सिद्ध तपे–श्वर आपके सम्पूर्ण अंग के ऊपर भस्म विभूती लेपन से अंग कान्ती तेजस्वी हैं तथा सुनहरी घुंगराली जटाओं में अर्धचन्द्र जो अति सुन्दर दिखता है। गले में नाद जनेऊ तथा कर्ण कुण्डल से युक्त आप वटवृक्ष की छाया में नागासन में विराजमान हैं। आपकी ध्यान मग्न छबि, जो आलौकिक दर्शन और किसी भी देवी–देवताओं में नहीं है। अर्थात् आप जैसे अद्‌भुत महादेवता का सभी देवी–देवता सुर

मुनि भक्त जन आदर से पूजन करते हैं व आदेश करते हैं।

चिदानन्द सन्तन हितकारी।
मंगल करण अमंगल हारी।।
पूर्ण ब्रह्म सकल घट वासी।
गोरक्षनाथ सकल प्रकाशी।।

अर्थ-हे सच्चिदानन्द आप भक्त–सन्तन के अमंगल को नष्ट करके मंगल करने के लिए तथा उनके हितार्थ सकल संसार के घट–घट में पूर्ण ब्रह्म स्वरूपी गुरु गोरक्षनाथ रूप में वास करते हैं अर्थात् अवतरित हुए हैं और अपने ज्ञान रूपी प्रकाश से सारे संसार को आलौकित कर चिदानन्द प्रदान कर रहे हैं।

गोरक्ष गोरक्ष जो कोई ध्यावे।
ब्रह्म रूप के दर्शन पावे।।
शंकर रूप धर डमरू बाजे।
कानन कुण्डल सुन्दर साजे।।

अर्थ-हे शिवस्वरूप पारब्रह्म – जो प्राणी आपके **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** यह मंत्र का नाम जपता है, उन्हें परब्रह्म शिव का साक्षात् दर्शन होता है। जिनके कानों में सुन्दर कुण्डल अत्यन्त शोभायमान है तथा डमरू धर ध्वनि बजाते शिव स्वरूप में आपका दर्शन होता है।

(अर्थात् साधक ध्यान योग में परिपक्व अवस्था में जीव–शिव मिलन होकर नाद ब्रह्म डमरू की ध्वनि सुनायी देती है।)

नित्यानन्द है नाम तुम्हारा।
असुर मार भक्तन रखवारा।।
अति विशाल है रूप तुम्हारा।
सुर नर मुनि जन पावे न पारा।।

अर्थ-हे रक्षपाल आप सदा भक्तों की रक्षा करने वाले और दुष्टां का दमन करने वाले तथा भक्तों को नित्य आनन्द प्रदान करने वाले हैं। इसलिए आपको नित्यानंद नाम से पुकारा जाता है। हे अपरम्पार आपका यह रूप अति विशाल व्यापक और विस्तृत है कि सुर नर मुनि जन उसका भेद पाने में असमर्थ हैं।

दीनबन्धु दीनन हितकारी।
हरो पाप हम शरण तुम्हारी।।
योग युक्ति में हो प्रकाशा।
सदा करो सन्तन तन वासा।।

अर्थ-हे नाथ संत शिरोमणि आप दीनों के स्वामी और दीन निर्बल को बल देकर उन्हीं का हित करने वाले हैं हमें क्षमा करो। हम आपके शरणागत हुये हैं। हमारे पापों और दुष्कर्मों का हनन तथा हरन करके हमारा उद्धार करो। हे महायोगेश्वर आप सदा सर्वदा नाथ सिद्ध साधु–संतों में वास करते हैं। आपका योग साधना में महा योग ज्ञान एवं आत्मज्ञान का प्रकाश आलौकिक, पुलकित हो उठता है।

प्रातःकाल से नाम तुम्हारा।
सिद्धि बढ़े अरू योग प्रचारा।।
हठ हठ हठ गोरक्ष हठीले।
मार मार वैरी के कीले।।

अर्थ-हे सतगुरु जी जो भी प्राणी (साधक, भक्त, योगी) नित्य प्रातः अर्थात ब्रह्म महुर्त में आपका **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इस नाम मंत्र का चिन्तन करके आपको पुकारता है। उसे उत्तम योग तथा श्रेष्ठ सिद्धियाँ अनायास ही शीघ्र प्राप्त होती हैं क्योंकि आप हटयोगी अपने हट से उसके काम क्रोध इत्यादि जैसे वैरियों, दुष्टों को कीलित (संहार) करते हैं। (अर्थात नित्य प्रातः **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** यह मंत्र के हट योग चिन्तन

से प्राणी मात्र के सभी कु–संस्कार नष्ट होकर वह श्रेष्ठतम योगी तथा सिद्धि को प्राप्त होता है।)

चल चल चल गोरक्ष विकराला।
दुश्मन मार करो बेहाला।।
जय जय जय गोरक्ष अविनाशी।
अपने जन की हरो चौरासी।।

अर्थ–हे अति विकराल गोरक्षनाथ जी जब हम आपको पुकारेंगे तब आप अति शीघ्र (तत्काल) आकर हमारे शत्रुओं को मारकर उन्हें बेहाल कर देना। हे अविनाशी गुरु गोरक्षनाथ जी आपकी जय–जय कार हो और अपने जन जनता, सेवक, साधक को आवागमन से मुक्त कर उन्हें चौरासी लाख योनि जन्म से

मुक्ति देना।

(अर्थात् जब साधक **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इस मंत्र के नाम से गुरु गोरक्षनाथ जी को पुकारते हैं, भजन तपस्या करते हैं तब श्री नाथ जी तत्पर आकर साधक के सभी शत्रु काम, क्रोध, मद इत्यादि कुसंस्कारों को नष्ट कर शुद्ध अन्त:करण, उनमन अवस्था में जन्म मृत्यु के परे ले जाता है।)

अचल अगम हैं गोरक्ष योगी।
सिद्धि देवो हरो रस भोगी।।
काटो मार्ग यम की तुम आई।
तुम बिन मेरा कौन सहाई।।

अर्थ-हे सिद्ध योगेश्वर, आप अचल अर्थात स्थितप्रज्ञ हैं।

अमर हैं, अगम हैं। सिद्ध योगियों के योगेश्वर हैं। अतः हम पर कृपा दृष्टि कर हमारे विषय भोग, शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गंध इत्यादि विषय रस भोगों का हरन करें अर्थात् श्रेष्ठ योग मार्ग में उन्नत करें और साधना में रूकावट करने वाले यममार्ग (कु–संस्कार) से बचाकर हमें सिद्धियाँ प्रदान करें। अतः आपके बिना हमारा और कौन सहारा है।

अजर अमर है तुम्हरी देहा।
तुम अविनाशी सनकादिक सब जोरहि नेहा।।
कोटिन रवि सम तेज तुम्हारा।
है प्रसिद्ध जगत उजियारा।।

अर्थ-हे जगदीश्वर, आप अजर अमर देह धारी एवं अविनाशी हैं। सनकादिक मुनिजन भी आपके **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** नाम मन्त्र का स्मरण करते हुए आपके अनन्त कोटी सूर्य के समान तेज पुंज स्वरूप के दर्शनाभिलाषी होते हैं जो कि इस तेज पुंज स्वरूप का सम्पूर्ण जगत संसार में उजियाला ही उजाला हो रहा है।

योगी लखे तुम्हारी माया।
पार-ब्रह्म से ध्यान लगाया।।
ध्यान तुम्हारा जो कोई लावे।
अष्ट सिद्धि नव निधि घर पावे।।

अर्थ-हे पारब्रह्म योगेश्वर आपकी महा योगमाया तो सिद्ध,

महासिद्ध योगेश्वर ही जान सकते हैं। जो महायोग ज्ञान प्राप्त कर पारब्रह्म के ध्यान में लीन हो जाते हैं अर्थात् जो योगेश्वर, प्राणी आपके पारब्रह्म स्वरूप का ध्यान (योग साधना में) लगाते हैं वह अष्ट सिद्धि नव निधि को प्राप्त करते हैं।

शिव गोरक्ष है नाम तुम्हारा।
पापी दुष्ट अधम को तारा।।
अगम अगोचर निर्भय नाथा।
सदा रहो सन्तन के साथा।।

अर्थ-हे शिव स्वरूप गुरु गोरक्षनाथ जी आपका "**ॐ शिव गोरक्ष योगी**" (मूल मंत्र) नाम है। जिस पापी दुष्ट अधम प्राणी ने आपका यह (मूल मंत्र) नाम लिया है उनको भी आपने

भवसागर से तार लिया है। हे अगम अगोचर गुरु गोरक्षनाथ जी आप निर्भय हैं। भयहारी हैं। आप सदा सर्वदा साधु संत योगियों के साथी संगी अर्थात सहवासी हैं।

शंकर रूप अवतार तुम्हारा।
गोपीचंद भर्तृहरि को तारा।।
सुन लीजो गुरु अरज हमारी।
कृपा सिन्धु योगी ब्रह्मचारी।।

अर्थ-हे बाल ब्रह्मचारी गुरु गोरक्षनाथ जी आप साक्षात शिव आदिनाथ जी का स्वरूप एवं शिव (आदिनाथ) अवतार हो, आपकी शरण में आये हुए भर्तृहरि गोपीचन्द को भव–सिन्धु से तारकर उन्हें अजर–अमर कर दिया अतः आप कृपा सिन्धु हैं।

महा योगी हैं। बाल ब्रह्मचारी हैं। हे प्रभु हमारी अरज सुनो कि हम पर कृपा कर हमें भी भव सिन्धु से पार उतार दो।

पूर्ण आस दास की कीजे।
सेवक जान ज्ञान को दीजे।।
पतित पावन अधम अधारा।
तिनके हेतु तुम लेत अवतारा।।

अर्थ-हे महाज्ञानी गुरु गोरक्षनाथ जी हम पतित, अधम, प्राणियों को आधार देकर हमें अपने चरणों का दास बना लीजिये। आपका सेवक जानकर हमें महाज्ञान, आत्म ज्ञान देकर हमारी आस की तृप्ति कीजिये। अत: इस हेतु आपने यह (गुरु गोरक्षनाथ) अवतार लिया है। जो कि हमारा उद्धार कीजिये।

अलख निरंजन नाम तुम्हारा।
अगम पंथ जिन योग प्रचारा।।
जय जय जय गोरक्ष भगवाना।
सदा करो भक्तन कल्याना।।

अर्थ-हे भगवान गोरक्षनाथ जी आपकी जय हो। आपकी जय हो। आपकी जय हो। आप अलख निरंजन नाम से प्रसिद्ध हैं और आप नाथ सिद्धों का अगम पंथ है जिनसे महायोग ज्ञान का प्रचार इहलोक में करके प्राणियों तथा अपने भक्तों का सदा सर्वदा कल्याण करते रहते हो।

जय जय जय गोरक्ष अविनाशी।
सेवा करे सिद्ध चौरासी।।
जो यह पढ़े गोरख चालीसा।
होय सिद्ध साक्षी जगदीशा।।

अर्थ-हे गुरु गोरक्षनाथ जी आप अविनाशी, अजर अमर और चिरंजीव योगी हैं। आपकी सेवा भक्ति भक्तजन, मुनिजन, साधु–संत एवं सिद्ध चौरासी और अनन्त कोट सिद्ध करते हैं। आपकी त्रिकाल त्रिवार जय–जय कार हो और जो प्राणी यह गोरक्ष चालीसा नित्य नियम से पढ़ता है तथा स्मरण करता है वह प्राणी सिद्ध हो जाता है। अर्थात् उसे सिद्धियों की प्राप्ति होती है। ऐसा जगदीश्वर शिव भगवान को साक्षी रखकर कहता हूँ।

बारह पाठ पढ़ें नित्य जोई।
मनोकामना पूर्ण होई।।
और श्रद्धा से रोट चढ़ावे।
हाथ जोड़कर ध्यान लगावे।।

अर्थ-हे शम्भुजती गुरु गोरक्षनाथ जी जो प्राणी नित्य आपके स्वरूप का **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इस मंत्र के द्वारा जाप करते हुए ध्यान लगाते हैं। आपका पूजन पाठ कर रोट का भोग लगाते हैं और हाथ जोड़कर नतमस्तक आदेश करते हैं। अर्थात् आपके चरणों में शरणागत हो जाते हैं और यह गोरक्ष चालीसा का नित्य बारह बार पाठ करते हैं तो उनकी मनोकामना तत्काल पूर्ण होती है।

सुने सुनावे प्रेमवश पूजे अपने हाथ।
मन इच्छा सब कामना पूरे गोरक्षनाथ।।

अर्थ-जो प्राणी इस गोरक्ष चालीसा का पाठ श्रद्धा से, प्रेम से, भक्ति से करते हैं, सुनते एवं सुनाते हैं तथा श्री शम्भु जती गुरु गोरक्षनाथ जी का पूजन पाठ करते हैं और "**ॐ शिव गोरक्ष योगी**" इस मंत्र का जाप एवं ध्यान करते हैं उनकी मन की इच्छा और समस्त कामनायें गुरु गोरक्षनाथ जी पूर्ण करते हैं।

अगम अगोचर नाथ तुम।
पार ब्रह्म अवतार।।
कानन कुण्डल सिर जटा।
अंग विभूति अपार।।

अर्थ-हे अपरंपार परब्रह्म गुरु गोरक्षनाथ जी, आप अगम हैं, अगोचर हैं आप अंग कान्ति में भभूति रमाये हैं। जिस काया से तेज प्रकट हो रहा है। कानों में चन्द्र सूर्य समान तथा आनन्द और दानार्थ उद्देश्य से कुण्डल दैदिप्यमान चमक रहे हैं। शीश स्थान पर नीली-पीली जटाओं में अर्धचन्द्र अत्यन्त शोभायमान हैं अर्थात आप साक्षात परब्रह्म अवतरित हुए हैं।

सिद्ध पुरुष योगेश्वरो।
दो मुझको उपदेश।।
हर समय सेवा करूँ।
सुबह शाम आदेश।।

अर्थ-हे सतगुरु, सिद्ध पुरुष, हे महायोगेश्वर गुरु गोरक्षनाथ जी आप मुझे ऐसा उपदेश देना कि मैं सदा सर्वदा प्रत्येक क्षण में आपकी सेवा करता रहूँ और प्रातः संध्या आपके चरणों को नमन होकर आदेश करता रहूँ।

इतना गुरु गोरक्षनाथ सिद्ध चालीसा अर्थ सहित सम्पूर्ण भया।

श्रीनाथ जी गुरुजी को आदेश! आदेश!!

❋ श्री गुरु गोरक्षनाथ स्तोत्रम् ❋

ॐ नमो गोरक्षनाथायः कोटिब्रह्मसमं बलम्।
दायार्द्रलोचने नैव कृपा कुरु ममोपरि।।१।।
ऐरावती कूल पार्श्वे ऐशान्यां मन्दिर तव।
अतस्त्वं याच्यसे नाथ दया कुरु ममोपरि।।२।।

अर्थ-ॐ गुरु गोरक्षनाथ जी आपको नमस्कार है, आप में कोटि ब्रह्म समान बल है, दया से भीगे नेत्रों से ही मुझ (भक्त) पर कृपा करो।।१।। ऐरावती नदी के तट के निकट ईशान कोण में आपका मन्दिर है। हे नाथ! आपसे याचना करता हूँ मुझ (भक्त) पर कृपा करो।।२।।

सिद्धानां देव-देवोऽसि योगिनामिन्द्र एव च।
शतसूर्यसमं तेजः क्षमां कुरु ममोपरि।।३।।
अग्नि सेवन विज्ञोऽसि योगसारमुच्चये।
कृपां कुरु दया सिन्धो! कुरु प्रीति ममोपरि।।४।।

अर्थ-आप सिद्धों के देवाधी देव महादेव हो योगियों के इन्द्रराज योगिराज हो, सौ सूर्यों के समान आपका तेज है मुझ (भक्त) पर क्षमा करो।।३।। हे (गुरु) गोरक्षनाथ जी आप अग्नि सेवन विज्ञ हैं, जो कि गोरक्ष धूनि की मर्यादा (प्रभाव) प्रसिद्ध हैं आप योग का सार समुच्चय करने में दक्ष हैं जो कि योग सारावली शिव योगसार संग्रह योगबीज प्रभृति प्रसिद्ध हैं, हे दया के सागर! मुझ (भक्त) पर प्रीति करो।।४।।

शिवदत्त प्रसादेन करोमि सेवनं तव।
ऋद्धि सिद्धि विधानेन कुरु प्रेम ममोपरि।।५।।
पंचश्लोक विधानेन यः पठति श्रृणेति च।
तस्य ऋद्धिश्च सिद्धिश्च विधानेन भविष्यति।।६।।

अर्थ-हे गुरु गोरक्षनाथ जी! शिवदत्त प्रसाद से आपकी सेवा करता हूँ ऋद्धि सिद्धि विधान से मुझ (भक्त) पर प्रेम करो।।५।। इस पांच श्लोकों को विधान से जो पढ़ता है और जो सुनता है, उनको ऋद्धि तथा सिद्धि विधान से प्राप्त होगी।।६।।

ग्रह भूत पिशाचाना नाशन परमदभुतम्।
अन्न ददाति वसु च गृहे मंगलमन्वेहम्।।७।।

वेणी प्रसाद निर्मितं त्रिकालं सः पठेन्नरः।
तस्य नाथ प्रसादेन भक्ति र्भचति निश्चला।।८।।

।। इति श्री गोरक्षनाथ स्तोत्रम् सम्पूर्णः।।

अर्थ-इस गोरक्षनाथ स्तोत्र का पाठ करने वाले भक्त जनों के गृह में भूत पिशाचों का नाश होता है, परम अद्‌भुत यह स्तोत्र घर में अन्न धन नित्य मंगल देता है।।७।। वेणी प्रसाद कृत इस गोरक्ष स्तोत्र का जो प्राणी प्रातः मध्यान्ह सायं त्रिकाल पाठ करता है उसको श्री गोरक्षनाथ जी की कृपा से गोरक्षनाथ जी में निश्चल भक्ति मिलती है।।८।।

।। श्री गोरक्षनाथ स्तोत्र सम्पूर्ण हुआ।।

❋ श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती ❋

आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की–२
श्रवण में कुण्डल है आला, ध्यान में बैठे है बाला।
बिछाकर बाघाम्बर छाला सदाशिव रूप,
धरा है अनुप करोड़ों भूप शरण में आये रक्षक की,
सदाशिव बाले गोरक्ष की! आरती जग के....।।१।।
सुनहरी जटा शीश साजे, भाल पर अर्धचन्द्र विराजे।
रूप लख जती पति लाजे, गेरूवा शाल,
त्रिपुण्ड है भाल, गले में माल, सुशोभित है रुद्राक्ष की
सदाशिव बाले गोरक्ष की! आरती जग के....।।२।।

अखंडित भस्म अंग सोहे, मधुर ध्वनि डमरू की होये।
देख छबि सुर नर मुनि मोहे,
गले बिच नाद, खड़ाऊं पाद, देवही आज जय की
जय योग की शिक्षक की।
सदाशिव बाले गोरक्ष की! आरती जग के....।।३।।
पार्वती पार नहीं पायो, राम और कृष्ण सुयश गायो।
सकल सिद्धों के मन भायो, योगी अवधूत,
आयो निज पूत, पंचमहाभूत, करत जय के जय
काल की भक्षक की।
सदाशिव बाले गोरक्ष की! आरती जग के....।।४।।

लिये है योग मुक्ति झोली, लुटा रहे योगामृत खोली।
शरण सब सिद्ध सन्त टोली,
सिद्ध सिरताज, भेष की लाज,
रखियो आज, अरज है पारस भिक्षुक की
सदाशिव बाले गोरक्ष की! आरती जग के....।।५।।
आरती जग के रक्षक की सदाशिव बाले गोरक्ष की!

❋ श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की आरती ❋

गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूं मैं शीश निमाऊं, कृपा सिन्धु भगवान।।
मृगछाला, बाघाम्बर, आसन दिया बिछाय।
चन्द्र सूरज कानों कुण्डल, तारे तेज समान।।
भस्मी रमाये जटा जमाये, मस्तक चन्द्रभान।
नाद जनेऊ त्रिशूल डमरू, सांभ शिव अवतार।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।१।।
तिन लोचन त्रिपुण्ड भस्म, तिलक करे हनुमान।
धूनी चेताये धूनी समाये, निरन्जन निराकार।।

चिमटा खप्पर हाथ लियो, सद्गुरुजी का ध्यान।
त्रिलोक की अलख जतावे, ऋद्धि सिद्धि भंडार।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।२।।
रक्त रूप में भगवा बाना, शक्ति ऊमा की भेंट।
अवधू जोगी त्याग वैरागी, झोली भगवा भेष।।
अन्नपूर्णा भोग लगावे, सुख सन्तोष की सेज।
रोट लंगोटी भेंट चढ़ाते, भैरव करी आदेश।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।३।।
ब्रह्मा विष्णु करे आरती, शिव गोरक्ष का मान।
नारद इन्द्रा चवर घुमाये सुरनर करी गुनगान।।

जय सद्गुरु जय कृपालु, ज्योति स्वरूप का ध्यान।
जय प्रतिपाली जय अविनाशी, झलके ब्रह्मज्ञान।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।४।।
वेद पुराण ना गाये महिमा विरला जाने वीर।
अलख निरंजन नाम लेते, लख चौरासी में जीत।।
सिद्ध चौरासी और नवनाथ, सब सन्तन में प्रीत।
घट–घट समाये कण–कण रमाये, अटल योग की रीत।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।५।।
शिष्य भर्तृहरि और गोपीचन्द, अजर अमर का पद।
आधि व्याधि सभी मिटाई, पूरनमल भया अमर।।

ऋषि मुनियों को जोग दिया, राम कृष्ण हनुमन्त।
ज्वाला काली और दुर्गा, सब शक्ति करी नमन।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।६।।
हट हटीले श्री गोरक्षनाथ, चार युगों का जोग।
नाद बिन्द की गांठ है, श्री नाथ निरंजन योग।।
बैठ बैठले नाम रटीले, परमानन्द का भोग।
अपने आपे आपमे, पालो परम सन्तोष।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।७।।
भूत प्रेत कलु कालका, सद्गुरु करो विनाश।
सुख दु:ख सब पार कर, दो मोक्षमुक्ति का धाम।।

भक्ति पूजा शुभ आरती, करलो आप स्वीकार।
कृपा करो हम सन्तन पर, जन्म–जन्म के दास।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान....।।८।।
निश दिन जो करे आरती, मनवांछित फल पाय।
सुख सम्पत्ति लाभ से जीवन सफल बनाय।।
नमन करूं सब भक्तन को विनती करो स्वीकार।
यो वन्दत विलासनाथ, गुरु आनन्द का दास।।
गुरु हमारे गोरक्षनाथ, सद्गुरु कृपा निधान।
आरती करूँ में शीश नमाऊं कृपा सिन्धु भगवान....।।९।।

।। ॐ शिव गोरक्ष योगी ।।

।। भजन।।

गुरु गोरक्ष पुकार

गोरक्ष गोरक्ष सुनलो पुकार। खड़े हुए हम तुम्हरे द्वार।।धृ।।

आदिनाथजी बहुत ही उदार। भर दो मेरा सब भण्डार।।१।।

ॐकार शिव तुम अपरमपार। सुख सम्पन्न भर दो संसार।।२।।

माया ब्रह्म के तुम हो पार। कर दो हमको भवसागर पार।।३।।

माया है तेरी बड़ी दुस्तार। नय्या हमरी कर दो पार ।।४।।

सगुण निर्गुण तुम्हारा रुप। घट घट में है आत्मस्वरुप।।५।।

अलख निरन्जन तुम्हारा नाम। रोम रोम में बसलो राम ।।६।।

गंगा जमना है तुम्हरे पास। मेरी सरस्वती कर दो पार।।७।।

ज्ञान दीपक जला दो साथ। अपनी शरण में ले लो नाथ ।।८।।

बन बन भटके हम हैं उदास। तेरे दर्शन की है बड़ी आस।।९।।

नाथ विलास ने किजो पुकार। साक्ष सतगुरु हमरा जोहार।।१०।।

गोरक्ष गोरक्ष सुनलो पुकार। खड़े हुए हम तुम्हरे द्वार।।११।।

।। प्रार्थना ।।

ॐ शिव गोरक्ष योगी

गंगे हर–नर्मदे हर, जटाशङ्करी हर ॐ नमो पार्वती पतये हर, बोलिये श्री शम्भू जती गुरु गोरक्षनाथ महाराज की जय, माया स्वरूपी दादा मत्स्येन्द्रनाथ महाराज की जय, नवनाथ चौरासी सिद्धों की जय, भेष भगवान की जय, अटल क्षेत्र की जय, रमतेश्वर महाराज की जय, कदली काल भैरवनाथ महाराज जी की जय, पात्र देवता भगवान की जय, ज्वाला महामाई की जय, सनातन धर्म की जय, अपने–अपने गुरु महाराज की जय, गौ–ब्राह्मण की जय, बोल साचे दरबार की

जय, हर हर महादेव की जय

कर्पूरगौरम् करुणावतारम्, संसारसारम् भुजगेन्द्र हारम्

सदा वसन्तम् हृदयार विन्दे, भवंभवानी सेहितम् नमामी

मन्दारमाला कलिनाल कायै कपालमालाङ्कित कन्थराय

नमः शिवायै च नमः शिवाय

गोरक्ष बालम् गुरु शिष्य पालम्, शेषां हिमालम् शशिखण्ड भालम्

कालस्य कालम जिनजन्म जालम्, वन्दे जटालम जगदब्जनालम्

गुरुर्ब्रह्मा गुरुविष्णु गुरदेवो महेश्वरा, गुरुः साक्षात्परब्रह्म,

तस्मै श्री गुरवै नमः

ध्यानमूलं गुरोमूर्ति, पूजा मूलं गुरु पदम
मन्त्रमूलं गुरुरवाक्य मोक्ष मूलं गुरु कृपा
मन्त्र सत्यं पूजा सत्यं सत्यदेवं निरन्जनम्
गुरुरवाक्य सदा सत्यं सत्यंम अेकम परंपदम्
त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धु च सखा त्वमेव
त्वमेव विद्या द्रविडम त्वमेव, त्वमेव सर्वम मम् देव देवाः
आकाशाय ताडका लिंगम पाताले वटुकेश्वरम्
मृत्यु लोके महाकालम सर्व लिंगम नमोस्तुते
शेली शृंगी शिर जटा झोली भगवा भेष

कानन कुण्डल भस्म लसै, शिव गोरक्ष आदेश।
ॐकार तेरा आधार, तीन लोक में जय–जय कार
नाद बाजे काल भागे, ज्ञान की टोपी, गोरख साजे,
गले नाद, पुष्पन की माला, रक्षा करें, श्री शम्भु जति
गुरु गोरक्षनाथ जी बाला।
चार खाणी चार बानी, चन्द्र सूर्य पवन पानी
एको देवा सर्वत्र सेवा, ज्योति पाटले परसो देवा
कानन कुण्डल गले नाद, करो सिद्धो नाद्कार
सिद्ध गुरोवरों को आदेश! आदेश!! आदेश!!!

❋ नित्य विधि ❋

प्रातः सुर्चिभुत होकर एकान्त पूजा स्थल में श्री गुरु गोरक्षनाथ जी के (मूर्ति, तस्वीर, श्रीनाथ सिद्ध यंत्र, चरण पादुका या कलश) की पंचोपचार पूजन करके ध्यानम् तथा गोरक्ष चालीसा का एवं स्त्रोत का पाठ करें।

अतः श्री गुरु गोरक्षनाथ जी की मूर्ति के सन्मुख आसन के ऊपर बैठकर प्रथम नमन कर गणेश जी का नाम लो, बाद में सद्गुरु जी का स्मरण करें और अपने सद्गुरु जी के दिये हुए गुरुमंत्र का या **"ॐ शिव गोरक्ष योगी"** इस शाबरी बीज मंत्र का प्रतिदिन १०८ बार या १ घंटा जप अवश्य करें। इस विधि के करने से आपको अवश्य मनोवांछित फल प्राप्त होगा।

अखिल भारतवर्षीय अवधूत भेष बारह पंथ योगी महासभा

पुस्तक प्राप्ति स्थान-

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर (अखाड़ा)

अपर रोड, हरिद्वार-249401 (उत्तराखण्ड) फोन : 01334-226583

Website : http://.yogigorakshnath.org, E-mail : yogivilasnath12@gmail.com

सिद्ध योगी बाबा मस्तनाथ आश्रम

मठ अस्थल बोहर, तह० जिला-रोहतक (हरियाणा) फोन : 01262-215718

नाथ सम्प्रदाय के उत्कृष्ट प्रकाशन

	पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
1.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (सम्पूर्ण शाबर मन्त्र तन्त्र नित्यकर्म इत्यादि विधि विधान का विवरण ग्रंथ (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
2.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-4) श्री नाथ सिद्धों की शंखढाल (योगमाया पूजन पद्धति का विस्तृत विवरण) (हिन्दी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
3.	श्री नाथ रहस्य (खण्ड-1, 2, 3) (अंग्रेजी अनुवाद)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	400/-
4.	श्री नवनाथ (हिन्दी) (चरित्र दर्शन एवं साक्षात्कार विधि तथा अपेक्षित कार्य पूर्ति-विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	65/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)		लेखक/संचालक	मूल्य
5.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (हिन्दी) (अपेक्षित कार्य सिद्धि एवं सुरक्षा कवच के लिये पाठ हवन के विधान)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
6.	श्री नाथ सिद्ध कवचम् (अंग्रेजी)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	125/-
7.	श्री नाथ सिद्ध पाठ (नाथ सिद्ध पाठ, गोरक्षनाथ तंत्र-मंत्र शबदी आरती, भजन इ. विधि विधान सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	35/-
8.	श्रीनाथ सम्प्रदाय के तीर्थ स्थल (प्राचीन भर्तृहरि गुफा महात्म्य)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	250/-
9.	श्री गोरक्ष नाथ सिद्ध चालीसा (सरल हिन्दी अनुवाद स्तुति एवं आरती विधि सहित)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	10/-
10.	श्री गोरक्ष तंत्रम् (सरल हिन्दी अनुवाद तंत्र-मंत्र विधि)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
11.	श्री नाथ सिद्धों की ॐकार सिद्धि (उपासना-साधना)	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	80/-
12.	श्री नाथ सम्प्रदाय आरती-भजन संग्रह	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	45/-
13.	ॐ शिवगोरक्ष व्रत कथा	महन्त डॉ. योगी विलासनाथ	15/-
14.	श्री नाथ सिद्धों के मंत्र-तत्र टोटके	महावीर सैनी (गुरु महन्त डॉ. योगी विलासनाथ)	160/-
15.	योगी सम्प्रदाय नित्यकर्म संचय	योगी भंभूलनाथ जी	40/-

पुस्तक सूची (हरिद्वार से प्रकाशित)	लेखक/संचालक	मूल्य
16. गोरक्ष स्तवांन्जलि	योगी भंभूलनाथ जी	20/-
17. श्री गोरक्ष सहस्त्र नाम स्तोत्र	योगी भंभूलनाथ जी	36/-
18. शब्दावली व भजन	योगी भंभूलनाथ जी	50/-
19. अनुभव भजन माला	भोलानाथ जी योगी	60/-
20. श्री नाथ चरित्र	योगी वीरनाथ जी	140/-
21. श्री बाबा मस्तनाथ चरित्र	योगी शंकरनाथ जी	100/-
22. अस्थल बोहर मठ का संक्षिप्त इतिहास	योगी शंकरनाथ जी	100/-
23. श्री बाबा मस्तनाथ कथा	रामेश्वरनाथ जी	70/-
24. चन्द्रावतार सिद्ध चौरंगीनाथ (पूरण भगत)	शिवानी शर्मा	35/-
25. दिव्य भूमि मठ अस्थल बोहर एवं पूजनीय गुरुदेव	शिवानी शर्मा	100/-
26. श्री सिद्ध बाबा मस्तनाथ चालीसा	शिवानी शर्मा	10/-
27. श्री बाबा मस्तनाथ सहस्त्र नाम	शिवानी शर्मा	20/-
28. श्री मस्तनाथ चरितम् (बड़ी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	100/-
29. श्री मस्तनाथ चरितम् (छोटी)	डॉ. सौभाग्यवती नान्दल	30/-

पुस्तक सूची (गोरखपुर से प्रकाशित),लेखक/संचालक, मूल्य

उप कार्यालय-गोरक्षनाथ मन्दिर, गोरखपुर

फोन : 0551-2255453, 2255454, 2255455

30. गोरखबाणी-रामलाल श्रीवास्तव , 50/-, 31. गोरख चरित्र-रामलाल श्रीवास्तव, 30/-, 32. गोरख दर्शन (हिन्दी फिलॉसफी), अक्षय कुमार बेनर्जी, 90/-, 33. गोरख दर्शन-विजय पाल, 50/-, 34. श्री नाथ सिद्ध चरितामृत-रामलाल श्रीवास्तव, 30/-, 35. गोरक्षनाथ एवं उनकी परंपरा का साहित्य-डा. दिवाकर पाण्डेय, 40/-, 36. आदर्श योगी-अक्षय कुमार बेनर्जी, 25/-, 37. योगासन-रामलाल श्रीवास्तव, 30/-, 38. सिद्ध सिद्धान्त पद्धत-रामलाल श्रीवास्तव, 35/-, 39. गोरक्ष सिद्धान्त संग्रह-रामलाल श्रीवास्तव, 40/-, 40. हटयोग प्रदीपिका, रामलाल श्रीवास्तव, 35/-, 41. योग बीज-रामलाल श्रीवास्तव, 15/-, 42. नाथ योग-अक्षय कुमार बेनर्जी, 15/-, 43. अमनस्क योग-अक्षय कुमार बेनर्जी, 20/-, 44. गोरक्ष पद्धति-रामलाल श्रीवास्तव, 20/-, 45. गोरक्ष शतक-रामलाल श्रीवास्तव, 20/-, 46. वैराग्य शतक-रामलाल श्रीवास्तव, 20/-, 47. गौरक्ष वैदिक पूजा पद्धत-वेदाचार्य रामानुज त्रिपाठी, 20/-, 48. विचार दर्शन (युग पुरुष महन्त दिग्विजय नाथ...ने कहा)-योगी आदित्यनाथ, 20/-, 49. प्रताप असी बावणी (कविता संग्रह)-मनोहर द्विवेदी, 15/-, 50. योगवाणी अंक (गोरखबाणी)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 51. योगवाणी (गोरक्ष चरित्र दर्शन)-गोरखनाथ मन्दिर, 15/-, 52. योगवाणी (नाथ सिद्ध चरित्रांक)-गोरखनाथ मन्दिर, 40/-, 53. योगवाणी (शिव संहिता)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 54. योगवाणी (सिद्ध दर्शन)-गोरखनाथ मन्दिर, 15/-, 55. योगवाणी (नाथ तीर्थ स्थल)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 56. योगवाणी (नाथ सिद्ध बानी)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 57. योगवाणी (गोरक्ष सिद्धान्त)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 58. योगवाणी (गोरक्ष ग्रन्थावली)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 59. योगवाणी (मत्स्येन्द्रनाथ अंक)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 60. योगवाणी (सर्व धर्म समभाव)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 61. योगवाणी (राष्ट्रीय एकता)-गोरखनाथ मन्दिर, 25/-, 62. योगवाणी (विशेषांक 1994)-गोरखनाथ मन्दिर-, 15/-

श्री नाथ सिद्ध यन्त्र

(विधि विधान द्वारा सिद्ध किये हुये)

साईज	ताम्बा (मूल्य)	तांबा (सिल्वर पॉलिश) मूल्य
3× 3 इंच	50/-	60/-
5×5 इंच	70/-	80/-
7×7 इंच	90/-	110/-
9×9 इंच	300/-	325/-
12×12 इंच	425/-	450/-

कैमरा फोटोग्राफ

गुरु गोरक्षनाथ, बाबा मस्तनाथ, बाबा सुन्दरनाथ, बाबा बालकनाथ, रतननाथ, नवनाथ, भैरव, ज्वालाजी, मृत्युंजय आदि सभी नाथ सम्प्रदाय-प्रासंगिक (चरित्रनुरुप) कैमरा फोटो।

साईज	कैमरा फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
छोटे फोटो P/C=5" X 3.5"	5/-	-
बड़े फोटो B/C=7" X 5"	10/-	35/-
नवनाथ स्वरुप B/C=7" X 5"	10/-	35/-
आगे आगे गोरख जागे BB/C=10" X 5"	25/-	
बड़ा फोटो B,B,B/C=10" X 8"	35/-	-

MP3-DVD-VCD (सी.डी.)

		MP3	DVD VCD
अमृतांजलि (भाग-1+2) (गोरक्ष चालीसा, चौरासी सिद्ध, चालीसा, ज्ञान गुदडी, भजन इत्यादि)	गायक-सोमनाथ शर्मा भजन रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री नाथ सिद्ध पाठ भजन (भाग-1+2)	रचना-योगी विलासनाथ	80/-	100/-
श्री गोरक्ष वन्दना, भजन	रचना-योगी विलासनाथ	40/-	50/-

कैलेण्डर फोटो

विवरण	साईज	कैलेण्डर फोटो	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	20 " X 14 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (ब्रह्माण्ड)	22 .5" X 17. 5 "	25/-	160/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	14 " X 9 "	15/-	80/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	10 " X 7 "	10/-	40/-
गुरु गोरक्षनाथ जी (मृगस्थली)	7 " X 5 "	5/-	25/-
आगे-आगे गोरख जागे	16.5 " X 39. 5 "	30/-	225/-
बाबा मस्तनाथ जी	7 " X 5 "	3/-	25/-
बाबा मस्तनाथ जी	30 " X 17 "	10/-	-
श्री नवनाथ स्वरुप दर्शन	22 .5" X 17. 5 "	25/-	225/-
पोस्टकार्ड साईज फोटो	5" X 3.5"	3/-	-

यन्त्र- (आर्ट पेपर पर रंगीन प्रिन्टेड)

यन्त्र विवरण	आर्ट पेपर पर प्रिन्टेड	लेमिनेटेड फोटो फ्रेम
श्री नाथ सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
सर्वतो महारुद्र नवनाथ चौरासी सिद्ध यन्त्र	10/-	70/-
श्री नाथ सिद्ध योगिनी यन्त्र	10/-	70/-
धरत्री गायत्री यन्त्र	10/-	70/-
उपरोक्त चारो यन्त्रों का सैट	40/-	300/-

कैसेट

गुरु गोरक्षनाथ चालीसा (भाग 1)	गायक - सोमनाथ शर्मा	30/-
चौरासी सिद्ध चालीसा (भाग 2)	गायक -सोमनाथ शर्मा	30/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्रीनाथ सिद्ध पाठ (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 1)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
श्री गोरक्ष वन्दना (भाग 2)	रचना-योगी विलासनाथ, गायक- अभिजीत	35/-
बाबा मस्तनाथ चमत्कार एवं महिमा भजन(1, 2, 3, 4, 5, 6, 7, 8, 9 भाग)		प्रत्येक 25/-
अन्य नाथ सम्प्रदाय की भजन कैसेटें		35/-

मूर्तियाँ (धातु में)

	नाम	साईज	वजन	मूल्य पीतल	मूल्य ब्रास (पीतल की पालिश)
1.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	9 "	2 Kg	1100/-	800/-
2.	गुरु गोरक्षनाथजी पद्मासन में बैठी (मृगस्थली)	6 "	1 Kg.	800/-	700/-
3	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	10 "	1.300gm.	1100/-	800/-
4.	आगे आगे गोरख जागे गोरक्षनाथ चलते हुये (खड़ी)	6 "	600gm.	800/-	
5.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	9 "	2 Kg.	1100/-	800/-
6.	बाबा मस्तनाथजी (बैठी) पद्मासन में	6 "	1 Kg.	800/-	700/-

लॉकेट, चाबी-छल्ले, कुण्डल इत्यादि

विवरण	मूल्य
लॉकेट (गुरु गोरक्षनाथ जी एवं बाबा मस्तनाथ जी के)	5/-, 10/., 20/-, 25/-, 30/-
गुरु गोरक्षनाथजी एवं बाबा मस्तनाथजी के	10/-, 15/-, 20/-, 30/-
फोटो युक्त चाबी छल्ले एवं लॉकेट (नादि पवित्री, चन्दन लकड़ी, शीशे, पीतल, तांबे, प्लास्टिक इत्यादि)	10/-, 20/-, 25/-, 40/-, 60/-
कुण्डल शीशा तथा रंगीन प्लास्टिक में	25/-, 30/-, 40/-
कुण्डल तारा मण्डल, चाइनीज बिलौरी पत्थर के	1500/-, 1800/-
आदि धातुओं में तथा रुद्राक्ष माला, कड़े इत्यादि	200/-, 500/-, 800/-, 1000/-
शंख (दक्षिण मुखी) प्रिन्टेड गोरक्षनाथ जी के चित्र	250/-
कौड़ी के ऊपर प्रिन्टेड गुरु गोरक्षनाथ जी के चित्र	50/-

शीशे के फ्रेम, मन्दिर

विवरण	मूल्य
गुरु गोरक्षनाथ तथा बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (3×2 इंच, 5×3.5 इंच, 7×5 इंच)	25/-, 50/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के शीशा मन्दिर (बिजली) लाइट वाले	100/-, 200/-, 250/-, 500/-
गुरु गोरक्षनाथ एवं बाबा मस्तनाथ जी के फोटो शीशा फ्रेम (गाड़ियों में बैटरी चालित, लाईट वाले)	150/-

(मूल्य सूची में समयानुसार परिवर्तन सम्भव है।)

नोट - मूल्य + पार्सल खर्च मनीऑर्डर या संस्था के नाम D. D. भेजने पर साहित्य पोस्ट द्वारा V.P. L., V.P.P. से भेजा जायेगा।

अधिक मात्रा (थोक) में साहित्य का आर्डर भेजने पर छूट प्राप्त करें।

सम्पर्क - महन्त डॉ. योगी विलासनाथ-मो.: 09412072703

ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी

श्री गुरु गोरक्षनाथ मन्दिर तथा श्री भर्तृहरि जी की प्राचीन गुफा

मुद्रक-शिव शक्ति प्रिन्टर्स, पालीवाल धर्मशाला, अपर रोड, हरिद्वार। फोन : 428796

ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी ॐ शिव गोरक्ष योगी